Postal Regd. MP/BHOPAL/244/18-20 'ANASUYA' RNI-Regd. No. 45134/86

प्रति अंक मूल्य - 4/-रु.
वार्षिक चन्दा 100/- रु. मात्र
आजीवन सदस्यता शुल्क : 700/-
प्रकाशन तिथि/पोस्टिंग तिथि : 1 सितम्बर 2020

अनसूया

वर्ष : 35 अंक :21 सितम्बर 2020

आद्य-संपादक : ज्योत्स्ना मिलन
संपादक : प्रीति शान्त

भीतर

कोविड-19 और काम की कमी

3. कोविड-19 के दौरान पश्चिम बंगाल में...
5. कर्णभूमि कृषक प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड ...
7. कामगारों को काम नहीं मिल रहा है ...
9. कोशिश करने वाले की कभी हार नहीं होती...

हम क्या करेंगे?

श्री इला र. भट्ट

कोरोना की महामारी ने सबसे जबरदस्त कोई संदेश कहें या सलाह कहें, जो भी हो, वो यह दिया है कि तुम सभी मनुष्य एक समान हो। वसुधैव कुटुंबकम्। वन ह्युमन कम्युनिटी। तुम भले ही अनेक प्रकार के भेदभाव पर जोर लगाते हो–जातपात ऊँच–नीच, गोरा–काला, देशी–परदेशी, स्त्री–पुरुष, शहर का, गाँव का, लेकिन कोरोना तो किसी के भी साथ जुड़ जाता है वह चाहे तो उसे साथ भी ले जा सकता है। कोरोना गाते–बजाते हुए तुमसे कहता है कि 'हम सब एक हैं!' यह है इस महामारी का संदेश।

इसका नाम है जीवनकला।

'जीवनकला सीखिये, सिखाइये'– ये हैं गाँधीजी के शब्द... गाँधीजी ने कहा या लिखा या मैंने पढ़ा, वह अद्‌भुत है! उनके ही शब्दों में,

'आज तो हमें न साफ पानी मिलता है, न शुद्ध हवा, न खालिस मिट्टी मिलती है। हम लोग सूर्य से भी छिप रहे हैं। यह सारे विचार (तथा) योग्य खुराक, योग्य तरीके से लें तो कितने युगों का काम हो गया समझो। उसका ज्ञान पाने के लिए न डिग्री चाहिए, न करोड़ों रुपये, केवल ईश्वर पर श्रद्धा, सेवा की चाह, पंचमहाभूत का थोड़ा परिचय व युक्ताहार का ज्ञान चाहिए।'

(लो, यह तो गुजरात विद्यापीठ का पाँच वर्ष का अभ्यासक्रम मिल गया!)

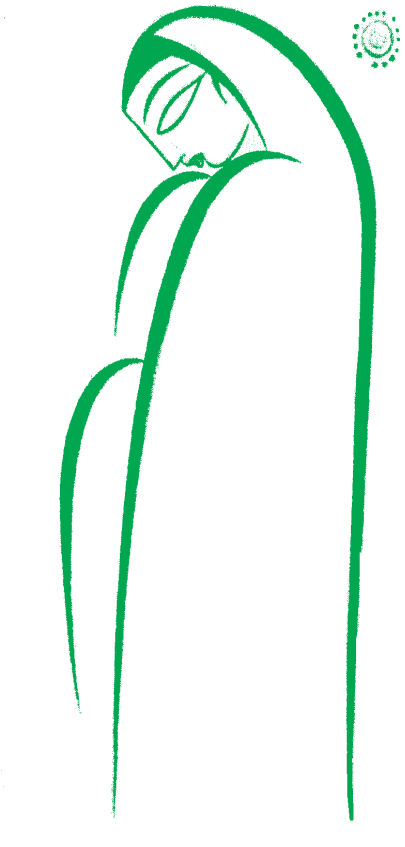

मैं यह कोई नई बात नहीं कर रही हूँ, ***हवा और पानी की तरह ज्ञान भी मनुष्य को अत्यधिक और बिना मूल्य मिला है। मनुष्य ने उसका क्या किया? पहले, ज्ञान को प्रदूषित किया और बाद में बाजार में बेच दिया...*** ऐसा किया है मानवजात ने। क्या हम भी ऐसा ही करेंगे? क्या करेंगे?

महामारी का बढ़ा हुआ जोर अभी नॉर्मल नहीं हुआ है। पता चला है कि

इसका जोर अभी भी बढ़ रहा है। देर-सबेर कभी तो नीचे उतरेगा, क्या ऐसी आशा कर सकते हैं कि नॉर्मल होगा? या नहीं? नॉर्मल लाने के लिए क्या करें, इसकी दवा भी अभी हाथ में नहीं आई है।

लेकिन, मुख्य सवाल यह है कि ***हमें कैसा 'नॉर्मल' चाहिये?*** जैसे करोड़ों प्रमाणिक मजदूरी करने वाले नागरिकों को घंटे के छठे हिस्से में शहर से, पहने हुए कपड़ों में ही खाली हाथ-पैर करके भगा दिया, ऐसा ही नॉर्मल दोबारा चाहिये है? ***शहरों को हिंसक होने दें? दमनकारी? ऐसे हिंसक विकास के अंत में मिलने वाली समृद्धि का नॉर्मल चाहिये है?*** मुझे नहीं लगता कि शहर में प्रदूषण घट रहा है। मैं बोलने जा रही थी कि ('होप आई एम रांग') यहाँ तो समाचार सुना कि शहर में मेट्रो का काम चालू हो गया है।

नॉर्मलता हम ही लाएँगे। नॉर्मल होकर ही छुटकारा मिलेगा। तो, हम क्या करेंगे? मेरे विचार आप सबको बताती हूँ। बहुत ही संक्षेप में, गंभीरतापूर्वक, नम्रतापूर्वक आपके समक्ष रखती हूँ:

पहला: तो, मैंने पहले ही कहा कि 'हम सब एक हैं', ***सजीव मात्र के बीच का भेदभाव हटाएँ,*** कुदरत और मनुष्य का संबंध अटूट रखें।

दूसरे: स्थानीय धंधा-व्यापार, उत्पादन को बढ़ावा दें। ***हमारी मेहनत का पैसा मेहनत करने वाले के पास जाये,*** हमारा प्रमाणिक पैसा प्रमाणिक के पास जाये-ऐसा सोचकर खर्च करें।

तीसरे: प्रवास की तादाद घटाएँ। वाहन का उपयोग लंबी दूरी के लिए करें। साईकिल का उपयोग करें। ***जहाँ तक पैदल जा सकते हैं वहाँ तक पैदल जाएँ।*** लंबी दूरी का कारोबार टालें। जहाँ-जहाँ संभव हो वहाँ स्थानीयता लाएँ।

इतना करके, कम-से-कम अपना खुद का कार्बन फूटप्रिंट तो घटाइये।

चौथे: सफाई की सतर्कता को ज्यादा बनाए रखें। ***सफाई करने के लिए केमिकल, दवा, पाउडर आदि का उपयोग घटाना चाहिये। इसके लिए कुदरती विकल्पों की खोज करनी चाहिये।*** इसके अलावा, सफाई के लिए अभी भी कई सारी बस्तियों में या तो पानी की कमी है, या पानी नहींवत् है।

जहाँ भी सफाई के लिए पानी का अभाव या कमी हो तो उसे दूर करने के लिए अभियान चलाना चाहिये।

पाँचवा: वेस्ट तथा कचरे की निकासी खूब जिम्मेदारी से करें। ***मूल तो, वेस्ट-कचरा पैदा ही न करें तो अच्छा,*** वेस्ट को बरबाद न करें।

'उपयोग करने के बारे में सोचें', इस सूत्र को प्रचलित करने की ज़रूरत है। इसके अलावा, रिसाइक्लिंग का उद्योग अपनाएँ। उपयोग में लाई गई वस्तुओं को भस्म न करें बल्कि उन्हें पुनर्जन्म दें।

छठे: ऊर्जा, ऊर्जामाता जय हो!? इसके बिना एक घड़ी नहीं रह सकते। छठा नंबर है कि घर में उपयोग की जा रही ऊर्जा का हिसाब रखें, उसका अपने स्तर पर ऑडिट व पड़ताल करें। बिजली, गैस, कोयले का उपयोग घटाएँ, इसके उपयोग में संयम रखें - ताकीद रखे। इसके उपरांत, ***बरसाती पानी का घर में तथा बाहर अपनी जमीन में संग्रह करें।*** अपने पर बरसी प्रभु की कृपा का सदुपयोग करें - थोड़ी-बहुत हरी वनस्पति उगाएँ - सब्जीभाजी, औषधि कंदमूल, फल, दलहन, चना इत्यादि। गमलों में, क्यारियों में, अगासी पर, झरोखे में, कमरे में।

सातवें: वह है टेक्नालॉजी। ***समुचित संपोषक हो ऐसी टेक्नालॉजी विकसित करें।*** हमारे काबू में रहे ऐसी, नहीं तो हम ही उसके गुलाम बन जाएँगे। ऐसा होगा, तभी तो हमारे कारीगरों के लिए अनुकूल 'टूल', औजार बनाने में सक्षम होंगे। इसके लिए स्थानीय स्तर पर आर.एण्ड डी. सेंटर मतलब रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट केंद्र खड़े कीजिये। मैं टेक्नालॉजी के खिलाफ नहीं हूँ। अंतत: तो हमारे स्थानीय शोध ही सच्चे, उपयोगी तथा उत्पादक होंगे। संक्षेप में, सभी युवा स्त्री-पुरुष कम्प्यूटर की जानकारी पाएँ। कम्प्यूटर में डिजीटल के बारे में पूरी तरह वाकिफ हों, सीखें, सिखाएँ। नहीं तो, फिर हम गुलाम ही बने रहेंगे। नहीं तो, आसपास की वास्तविकता से अनजान और अबोध रह जाएँगे। हाँ, यह सावधानी रखें कि मशीन कहे तब नहीं बल्कि हम मशीन को हम कहें, तब वह चले - ऐसा आयोजन करें। यह कठिन

तो है, लेकिन संभव है, अगर हम दृढ़ता से स्थानीयता में विश्वास करते हों।

क्या करेंगे?

परिवर्तन, परिवर्तन ऐसा जो टिकाऊ सस्टेनेबल परिवर्तन हो... हम ऐसी परिवर्तनमय नॉर्मलता लाएँ कि जो समझदारीपूर्ण और स्वविचारणीय हो। 'कॉपीकट' तो नहीं, हरगिज़ नहीं।

आज के सप्लाई और डिमान्ड के अर्थतंत्र के दमनकारी जाल में से तो बाहर निकलना ही है। ***हम ऐसा कुछ करें जिससे ऐसी अर्थव्यवस्था का सृजन हो जो तमाम सजीव सृष्टि का पोषण करे।***

ऐसी हो जीवनकला, 'नये नॉर्मल' की आने वाले समय की, गांधी के दिखाए मार्ग पर चलकर आज के महामारी युग में नित्य जीवन की ऐसी रीत सीखें, आचरण में लाएँ।

गांधी के बताए मार्ग पर काम करना हमने सीखा है। हमारा प्रत्येक काम - कर्म सत्य, सच्चाई को प्रकाशित करे, जो प्रेम और करूणा का मार्ग प्रशस्त करता है, हमारे सभी कर्मों का मार्ग है गांधीमार्ग। आगे जाकर, स्वयं, समाज और प्रकृति मां के अनुबंध के प्रति सजग करने की ओर ले जाये, जो गुलामी से मुक्ति दे, ये सब गांधी के ही अनिवार्य कार्य हैं। ये कार्य हम कर रहे हैं ... और करेंगे : फिर भले ही गांधी का 'ग' भी न लिखा हो... मुझसे कहा जाता है कि बहुत गांधी-गांधी करते हो तो कहीं गंधाने न लगे!

याद तो रहे कि 'हम सब एक हैं!'

(इलाबेन का समापन वक्तव्य, गुजरात विद्यापीठ, ता.26.6.20)

कोविड-19 के दौरान पश्चिम बंगाल में बुनकर

'अगर हालात ना बदले तो हम मर जाएँगे।' फुलिया की एक बुनकर ***रानीबेन*** कहती हैं।

वर्ष 2019 के अंत के बाद से कोविड पूरी दुनिया में तेजी से फैल गया है। इस महामारी के बढ़ने से सबसे ज्यादा असंगठित क्षेत्र के लोग प्रभावित हुए और उनके स्वास्थ्य और आर्थिक सुरक्षा में तेजी से गिरावट आई।

फुलिया के हथकरघा बुनाई समुदायों के लिए आर्थिक और सामाजिक तौर विकट परिस्थितियाँ पैदा हो गई हैं। वर्ष

के आरंभ में, निर्यात आदेश अचानक से रोक दिये गये और गैर-लाभकारी चीजों की माँग में भी बाधा आई। निर्यात के आदेशों पर निर्भर रहने वाले बुनकरों ने अपना काम करना शुरू कर दिया था। लेकिन 23 मार्च के अंत में, भारत में एक सरकारी अनिवार्य लॉकडाउन शुरू हुआ। लॉकडाउन के लगते ही इन बुनकरों का पूरा उद्योग धराशाई हो गया क्योंकि ***इन बुनकरों ने आगामी समय में मिलने वाले सभी ऑर्डर को गंवा दिया, फिलहाल जो ऑर्डर उन्हें मिले थे, ज़रूरी चीज़ों के अभाव में वे पूरे नहीं हो पाए और इस तरह उत्पादन बंद हो गया।***

भविष्य में भी इस नुकसान की भरपाई की संभावना धूमिल ही दिखती है क्योंकि पुराने ऑर्डर रद्द हो गए हैं और उपभोक्ताओं पर भी दीर्घकालिक आर्थिक प्रभाव पड़ा है। फुलिया में ये बुनकर ऑर्डर पाने के लिए अब बिचौलियों, महाजनों से संपर्क कर उन्हें बुला रहे हैं। लेकिन माँग की कमी के कारण महाजन अपना पहले का स्टॉक ही नहीं बेच पा रहे हैं। इन महाजनों का जब तक पहले का स्टॉक न बिक जाए तब तक वे नए उत्पादों का ऑर्डर भी नहीं देंगे। इसके अलावा, ये महाजन उन उत्पादों को

संकट में बुनकर

अम्फान चक्रवात ने कई बुनकरों की छतों और करघों को नष्ट कर दिया। हालांकि सरकार ने राहत वितरित की, लेकिन भ्रष्टाचार के चलते कई ज़रूरतमंद लोग इस राहत से वंचित ही रह गये। चक्रवात ने इन समुदायों के सामने कई आर्थिक चुनौतियाँ उपस्थित कर दीं जिनसे अब लंबे समय तक इन समुदायों को जूझना ही होगा। रानी बेन ने बताया कि उनके पति को उन पेड़ों को काटने का काम मिला जो चक्रवात के कारण गिर गए थे लेकिन उन्हें इस काम के लिए 1,000 रुपये की बजाय मात्र 200 रुपये ही मिले।

भी नहीं ले रहे हैं जिनका उन्होंने लॉकडाउन होने से पहले ऑर्डर दिया था। जिन बुनकरों ने उस ऑर्डर को पूरा कर लिया था उन बुनकरों को उनके काम के लिए भुगतान नहीं मिल रहा है।

रेलवे प्राधिकरण ने भी पश्चिम बंगाल में नियमित रेल सेवा शुरू नहीं की है और कोलकाता के लिए यह एकमात्र परिवहन है। इसकी दूरी और लागत कई बुनकरों के लिए बहुत ज्यादा है। ऐसी स्थिति में, महाजनों ने यह भी कहा कि वे तब तक उत्पाद को नहीं बेच सकते जब तक ट्रेन सेवा फिर से शुरू नहीं हो जाती। *बुनकरों की स्थिति दिन-ब-दिन बदतर होती जा रही है।*

हालांकि पश्चिम बंगाल सरकार ने फुलिया के बुनकरों से कुछ साड़ियों की खरीदी की है। लेकिन साड़ी के लिए आदेश बुनकर समुदाय के सदस्यों को न देकर एक प्रभावशाली और मान्यता प्राप्त महाजन और उनके बुनकरों को दिया गया।

कोविड ने कई समुदायों के समक्ष कई तरह की कठिन परिस्थितियों को पेश किया है। मई के महीने में, एक विनाशकारी चक्रवात ने बंगाल में तबाही मचाई, जिससे चारों ओर विनाश हुआ।

अम्फान चक्रवात ने कई बुनकरों की छतों और करघों को नष्ट कर दिया। हालांकि सरकार ने राहत वितरित की, लेकिन भ्रष्टाचार के चलते कई ज़रूरतमंद लोग इस राहत से वंचित ही रह गये। चक्रवात ने इन समुदायों के सामने कई आर्थिक चुनौतियाँ उपस्थित कर दीं जिनसे अब लंबे समय तक इन समुदायों को जूझना ही होगा।

रानी बेन ने बताया कि उनके पति को उन पेड़ों को काटने का काम मिला जो चक्रवात के कारण गिर गए थे लेकिन उन्हें इस काम के लिए 1,000 रुपये की बजाय मात्र 200 रुपये ही मिले। *गोबरचर में रहने वाले बुनकरों ने पैसा कमाने के लिए मछली पकड़ने के जाल बनाना शुरू कर दिया है क्योंकि उनका गाँव गंगा नदी के पास है।*

सरकार इन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को मुफ्त चावल और गेहूं उपलब्ध करा रही है, जो न तो पौष्टिक है और न ही परिवारों के लिए पर्याप्त मात्रा में है। सरकार ने बुनकरों के लिए आधिकारिक राहत पैकेज भी घोषित नहीं किया है।

महिला बुनकर अब अपने अतिरिक्त कौशल जैसे खेत मजदूरी और इसी तरह के अन्य कामों पर निर्भर हैं और उनके पति निर्माण और ड्राइवरी की ओर रुख कर रहे हैं। इन क्षेत्रों में मनरेगा के तहत काम उपलब्ध नहीं है। पंचायत सदस्य, प्रधान आवेदन नहीं लेना चाहते थे इसलिए 'सेवा' सदस्यों ने मनरेगा के तहत काम पाने के लिए जिला मजिस्ट्रेट को एक पत्र सौंपा।

– मोमिता बेन,
स्टेट कोऑर्डिनेटर

कर्णभूमि कृषक प्रोड्यूसर् कंपनी लिमिटेड की कोरोना काल में सफलताएँ

कहा जाता है कि भारत किसानों का देश है। यहाँ की 70% आबादी का मुख्य रोज़गार खेती है। जितनी आमदनी उतने में ही अपने परिवार में मिल-बाँट करके जीने वाले शन्तिप्रिय किसानों की किसी पीढ़ि ने कभी भी लॉकडाउन का नाम तक नहीं सुना था। महामारी तो पहले भी आती थी, लेकिन ऐसा मंजर कभी नहीं देखा।

इस महामारी का दुष्प्रभाव यों तो सभी को भुगतना पड़ा लेकिन सबसे ज़्यादा किसानों को और उसमें भी सब्जी उत्पादक महिला किसानों को बहुत भुगतना पड़ा।

किसान जब लहलहाती फसल देखता है तो अपने सभी दु:ख, भूख, गम को भूल जाता है लेकिन जब फसल बेचना ही मुश्किल हो जाये, फसल खेत में ही ख़राब हो जाये, बाजार में बैठकर बेचने की अनुमति न हो, तो मानो उसके सारे सपने और अरमान एक साथ चूर-चूर हो जाते हैं।

कोरोना काल महिला सब्जी उत्पादक किसानों के लिये मानों मुसीबतों का पहाड़ बन गया। खेती किसानी के लिए सभी सामग्री महंगी हो जाती है और बेचने के लिये बाजार में मात्र दो घंटे का समय दिया जाये, एक जिले से दूसरे जिले तक आवागमन का साधन न मिले, ग्राहकों की जेब में सब्जी खरीदने के पैसे न हों और किसानों के जीवन यापन का एकमात्र साधन सब्जी उत्पादन ही हो तो आप समझ सकते हैं कि मुसीबत कितनी बड़ी है।

भागलपुर से 15 किलोमीटर दूर जगदीशपुर ब्लॉक के अंतर्गत हसनपुर गाँव की रहने वाली *सुनीता देवी* पति क्षतिस मंडल, अपने चार बच्चों के साथ 0.5 एकड़ जमीन पर खेती करती हैं। खेती ही उनके जीवन की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति का मुख्य साधन है।

उन्होंने बहुत अरमानों के साथ नेनुआ और बरबटी की खेती की। खेत से जैसे ही पहला उत्पाद निकला तो वे उसे बेचने के लिए बाजार लेकर गए लेकिन वहाँ पता चला कि केवल दो घंटे तक ही बाजार में बेचने की अनुमति है। उस दिन उनकी आधी सब्जी ही बिकी। वापस घर आकर बची हुई सब्जी जानवरों को देनी पड़ी। दूसरे दिन कम सब्जी लेकर गए लेकिन बेचने की आपाधापी में पुलिस की मार खानी पड़ी।

घर वापस आकर तय किया कि न फसल तोड़ेंगे और न ही बाजार जाकर बेचेंगे। लेकिन अपने बच्चों को भूखा भी तो नहीं देखा जा सकता। उन्होंने कोरोना का डर, पुलिस की मार जैसी सभी मजबूरियों को छोड़ा और सब्जी बेचने दोबारा बाजार गए। लेकिन सब्जियाँ तो उस दिन भी नहीं बिकीं। बाजार में जैसे-तैसे एक ग्राहक मिला तो लेकिन जब उससे सब्जी खरीदने की बात कही तो बोला 16 दिन से मेरा ऑटो बंद है तो मैं सब्जी कैसे खरीदूँ? इस तरह से यह समस्या बढ़ती ही चली गई।

ऐसे कठिन समय में महिला किसानों के द्वारा गठित और महिला किसानों द्वारा ही संचालित कर्णभूमि कृषक

प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड ने इस समस्या को दूर करने के बारे में विचार किया। उन्होंने मिल-जुलकर, सोच-विचार कर तय किया कि किसान अलग-अलग अपना उत्पाद बेचने के लिए जाएँ, इससे बेहतर है कि आठ से दस किसानों का उत्पाद एक साथ एकत्र करके स्थानीय बाजार की बजाय जिले की कॉलोनियों और बाजार में ले जाया जाये। साथ में केवल एक किसान ही जाये।

इसके लिए ट्रांसपोर्टेशन के खर्च को कंपनी की बचत से पूरा करने का निर्णय भी लिया गया। इस प्रकार किसानों की उपज न बिक पाने की समस्या का समाधान किया गया। इसके अलावा, बीज और अन्य सभी आवश्यक वस्तुएँ भी कंपनी से मँगवाकर किसानों को उचित मूल्य पर उपलब्ध करवाई गईं।

सुनीता देवी कहती हैं कि, 'कर्णभूमि का गठन वर्ष 2016 में कृषि विकास कार्यक्रम के लिए किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य महिलाओं को किसान के रूप में पहचान दिलाना था। कोरोना काल में यह कंपनी जीवन यापन के एक अच्छे साधन के रूप में उभरकर आई है।'

हालाँकि, पहले गाँव के कुछ लोग व्यंग्य करते हुए कहते थे कि, ***अच्छा, अब महिलाएँ भी किसान बनेंगी और सब्जियाँ कंपनी के द्वारा बिकेगी।*** उन लोगों के इस व्यंग्यात्मक पहलु को भी कोरोना काल में मिथक साबित कर महिला किसान गाँव में सम्मान और किसान का दर्जा प्राप्त करने में सफल हुई हैं।

- सुबोध भाई,
डिस्ट्रीक्ट प्रोग्राम को-ऑर्डिनेटर

बाढ़ के पानी ने फसलें बरबाद कर दीं

कहने को तो भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था और भारतीय जीवन की मुख्य धुरी है। एक समय ऐसा भी था जब हमारे देश में खेती को उत्तम माना जाता था इसलिए जिसके पास जितनी ज्यादा खेती होती थी उसको उतनी ऊँची हैसियत वाला माना जाता था।

लेकिन अब किसानों को मौसम की मार, फसल की बर्बादी के कारण कर्ज में डूब जाना जैसी कई समस्याओं से जूझना पड़ता है और अब ये कोरोना की महामारी ने सबके जीवन को रोक-सा दिया है।

किसानों के लिए तमाम योजनाएँ बनीं लेकिन उनकी दयनीय हालत में कोई सुधार नहीं हुआ। अभी भी कटिहार में किसान मानसून की मार सह रहे हैं। लगातार बारिश हो रही है, पकी फसल डूब रही है, सब्जियाँ सड़-गल रही हैं, खेतों में पानी भर जाने के कारण केले के पौधे, खीरा, हरी मिर्च के पौधे गल गए हैं।

हमारी सदस्य बहन ***फातिमा*** की फसल भी मानसून की शिकार हो गई। उनके खेत जलमग्न हो गए हैं। सब्जी की खेती भी बर्बाद हो गई है। पिछले साल 2019 में फातिमाबेन का बेटा बिजली गिरने से मारा गया था। बीच खेत में उनका घर है, जहाँ वे अपने बच्चों के साथ रहती हैं। फिलहाल वे यह सोच-सोचकर परेशान हैं कि खेती

रही नहीं तो वे अब क्या बेचेंगे और अपने बच्चों को क्या खिलाएँगे? फातिमाबेन की तरह कितनी किसान बहनें भूखमरी की कगार पर आ गई हैं। हमारी ***मीराबेन*** सात बच्चों के साथ यही कठिनाई झेल रही हैं। ऊपर से कटिहार में कोविड-19 का संक्रमण दिन-प्रति-दिन बढ़ता ही जा रहा है।

सरकार की राहत योजना के तहत जहाँ 60,000 हजार का नुकसान होता है वहाँ मात्र 6 हजार रुपये की क्षतिपूर्ति मिलती है। ऐसी स्थिति में किसान क्या तो कर्ज उतारेंगे और क्या तो घर चलाएँगे।

हर बार मानसून के समय ऐसा ही होता है। हमारी 'सेवा' की कार्यकर्ता बहनें उन सभी बाढ़ पीड़ितों एवं किसान बहनों की, जिनकी खेती, फसल पानी में डूब गई हो, उनकी सूची बनाकर मुखिया को देती हैं। ब्लॉक स्तर पर भी क्षतिपूर्ति दिलाती हैं।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 'सेवा' कटिहार के द्वारा बाढ़ पीड़ित क्षेत्र में राशन किट एवं दवाई वितरण किया जा रहा है। क्षेत्र के लगभग सभी किसान भाई-बहनों का किसान रजिस्ट्रेशन करवाया गया है। 'सेवा' के द्वारा क्रेडिट कार्ड बनवाया गया है जिससे इन बहनों को ब्लॉक से मुफ्त में बीज मिल जाता है।

-अंजना बेन,
ऑर्गनाइज़र

कामगारों को काम नहीं मिल रहा है

जून माह से लॉकडाउन समाप्त हुआ है लेकिन कोविड-19 का डर अभी भी बना ही हुआ है। इस डर के साथ ही हमें आगे बढ़ना होगा। अचानक आई इस महामारी से सभी के जीवन पर असर पड़ा है। अधिकांश श्रमजीवी सदस्यों का काम बंद हो गया है। जैसे घरेलु कामगार, निर्माण श्रमिक, स्ट्रीट वेंडर्स, घरखाता कामगार आदि। जैसे-जैसे शहरों-गाँवों में लॉकडाउन खुला, हमारे सदस्य काम की तलाश में निकल पड़े। गाँवो में मनरेगा के माध्यम से रोजगार मिल रहा है लेकिन शहरों में अभी भी बहुत परेशानी है। घरेलु कामगार बहनें जहाँ पहले 4 से 5 घरों में जाकर काम करती थीं, अब 2 से 3 घरों में जाकर काम करती हैं। अधिकांश घरों के मालिकों का कहना है कि आप सिर्फ हमारे यहाँ ही काम करो, कहीं और मत जाओ। इसी तरह मंडी भी अभी खुली नहीं हैं, जिसके कारण फेरी- टोकरी वाली सदस्य बहनों को भी सब्जियाँ बेचने के लिये नहीं मिल रहीं और जो मिल रही हैं उसके लिए किसान को नकद पैसा देना होता है। इसके पहले उधारी पर सामान मिल जाता था।

घरखाता कामगार बहनों को भी काम पहले की अपेक्षा कम ही मिल रहा है जैसे अगरबत्ती बनाना, पापड़ बनाना, सिलाई करना। यहाँ तक कि, राखी जैसे बड़े त्यौहार पर राखी बनाने का काम भी बहनों को कम मिल रहा है। ***'सेवा' द्वारा राखी बनाने वाली बहनों को, किराना दुकान में सामान खरीदने हेतु, पूजा सामग्री, सिलाई में लगने वाली सामग्री हेतु ऋण दिया गया ताकि ये अपना रोजगार सुचारू रूप से चला सकें परन्तु ये कुछ सदस्यों तक ही संभव हो पाया।*** इसके अलावा, कार्यकर्ता द्वारा छोटे कारखाना मालिकों से बात करके घरखाता कामगार को पेकिंग काम, चूड़ी बनाने का काम दिलवाया ताकि उनकी कुछ कमाई हो सके। म.प्र. सरकार द्वारा चलाई जा रही जीवन शक्ति योजना के तहत सिलाई करने वाली बहनों का ऑनलाइन पंजीयन करवाकर 12612 सदस्यों को मास्क बनाने का कार्य दिलवाया गया।

- कविता मालवीय, स्टेट को-ऑर्डिनेटर

प्रशिक्षण दिया, पूँजी दी, अब बहनों का काम चालु है

सभी शहरों में लॉकडाउन होने के बाद से सभी की आर्थिक स्थिति खराब है लेकिन कच्ची बस्ती में रहने वाले लोगों के हालात तो और भी ज्यादा खराब हैं। यों भी देखा जाए तो पहले भी उनके पास कभी काम होता था तो कभी नहीं होता था। रोज़ कमाकर रोज़ खाने वालों के पास तो बचत भी नहीं होती कि किसी मुसीबत के समय घर में बैठकर गुजारा चला लें। तिस पर कोरोना की महामारी ने इनके जीवन में और ज्यादा कठिनाई पैदा कर दी है।

शुरूआत में उधार करके, कर्ज लेकर किसी तरह से इन लोगों ने काम चलाया लेकिन अब तो उधार व कर्ज मिलना भी बंद हो गया है क्योंकि पुराना उधार ही अभी तक चुका नहीं पाए हैं। लॉकडाउन लगने से बहनों और उनके पति का भी रोज़गार बंद हो गया। उन्हें समझ में नहीं आ रहा है कि अब क्या करें? लॉकडाउन खुलने के बाद अब बहनें मदद की तलाश में उधर-इधर घूमने लगी हैं।

'सेवा' के ऑफिस में फिर से बहनों के फोन आने लगे कि हमें काम की ज़रूरत है, हमें काम दिलवाइये। इन बहनों की मदद करने का निर्णय लिया गया और शुरूआत सरकार द्वारा दिये गये राशन के वितरण में मदद से की। बहनों को वेलफेयर सोसायटी से भी राशन दिलवाया गया। लेकिन अब जिनके भामाशाह कार्ड बने हैं केवल उन्हीं लोगों को राशन मिल रहा है। लेकिन इस बस्ती में बहुत-सी बहनें ऐसी हैं जिनके भामाशाह कार्ड नहीं बने हैं इसलिए वे सब सरकार की इस सुविधा का लाभ नहीं उठा पा रही हैं। कई बहनों के 5-6 महीने के बने भामाशाह कार्ड वेरिफाई नहीं होने के कारण अटके हुए हैं इसलिए उनको भी राशन नहीं मिल पा रहा है। इन सभी बहनों की मदद के लिए 'सेवा' निरंतर काम कर रही है।

बहनों की ओर से बार-बार काम देने की माँग आने पर विचार किया गया कि इन बहनों को किस तरह से काम दिलवाया जाये। फिर तय किया गया कि त्योहार का मौसम आ गया है रक्षा बंधन, ईद, दीवाली आदि इसलिए इस संभावना को देखते हुए तुरंत ही बहनों को राखी बनाने का काम दिलवाने की बात तय की गई।

इसके बाद इस संबंध में 'सेवा' की आगेवान बहनों से बात हुई। आगेवान बहनों ने यह बात बस्ती की बहनों के साथ साझा की। उनकी बात सुनकर सात-आठ बहनों ने कहा कि हम राखी बनाने का काम करने के लिए तैयार हैं। उनमें से एक ***सुल्ताना बहन*** पहले राखियाँ बनाती थीं। इतना जानने के बाद 'सेवा' ने सुल्ताना बहन से बात करके उन सभी बहनों को राखी बनाने की ट्रेनिंग दिलवाई।

लेकिन अब पूँजी की समस्या आड़े आ गई। इन बहनों के पास घर में राशन भरने के लिए भी पैसा नहीं था तो राखी बनाने का कच्चा काल कहाँ से आता। तब ***'सेवा' ने इन बहनों के लिए पूँजी की भी व्यवस्था की ताकि बहनों के उत्साह में कोई कमी न आए और वे सब अपना काम ठीक समय पर कर पाएँ।*** पूँजी की व्यवस्था होने पर सभी बहनों ने राखी का काम शुरू कर दिया। तैयार राखियों को उनके घर के पुरुष सदस्यों ने बाजार में जाकर बेच दिया। इस तरह इस विकट स्थिति में रोजगार के अवसर उपलब्ध होने से बहनें आशान्वित हैं और 'सेवा' से जुड़ने के फायदे को समझ रही हैं।

- राबिया बेगम,
फील्ड आर्गनाइजर

कोशिश करने वाले की कभी हार नहीं होती

हमारी आगेवान *मीनाबहन* ग्राम सभा भकूना पो. भेसेड़ी जिला अल्मोड़ा की स्थाई निवासी हैं। अपनी शिक्षा के लिए मीनाबहन ने बहुत संघर्ष किया लेकिन हार नहीं मानी। मीनाबहन ने बताया कि,

मेरे माता-पिता बहुत अच्छे थे उन्होंने मुझे कक्षा 10 वीं तक पढ़ाया। जीवन के लिए जरूरी सभी चीजों के बारे में समझाया, ज्ञान दिया। मेरी इच्छा थी कि मैं और आगे पढ़ूँ, मेरे माता-पिता भी मुझे और पढ़ाना चाहते थे लेकिन मैं जहाँ रहती थी वहाँ 10वीं तक का ही स्कूल था। इसलिए जब मैं 18 साल की हुई तो मेरी माताजी ने मेरी शादी कर दी। मैंने सोचा कि शायद मेरी ससुराल वाले मुझे पढ़ाना चाहें, इसी आशा के साथ मैं अपने ससुराल आ गई। लेकिन ससुराल में किसी ने साथ नहीं दिया। मेरी ससुराल में दिन भर में काम ही इतना ज्यादा होता था कि पढ़ने का तो सोच ही नहीं पाती थी। मैं सोचती थी कि माताजी ने मुझे काम सिखाया होता तो मुझे ज्यादा कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ता। मेरी ससुराल में खेती-बाड़ी कम है इसलिए मैं बाहर भी खेतों में काम करने जाती थी।

धीरे-धीरे मुझे इस सबकी आदत हो गई। अब मुझे काम करना अच्छा लगने लगा। जब मैं 21 साल की थी तब मेरी बेटी का जन्म हुआ। उसका नाम मैंने रबिना रखा। इसके बाद मेरी एक और बेटी किरण तथा उसके बाद बेटे पवन का जन्म हुआ।

मेरे पति प्राइवेट स्कूल में शिक्षक थे। उन्हें महीने में 5,000 रुपये वेतन मिलता था। इतने कम रुपयों में मेरे परिवार का ठीक से गुजर-बसर नहीं हो पाता था। हर दिन पैसों का अभाव महसूस होता था इसलिए एक दिन हम दोनों के बीच वादविवाद हो गया कि परिवार का खर्च कैसे चले? हालाँकि, मेरे पति ने डबल एमए किया है लेकिन फिर भी उनकी कहीं अच्छी नौकरी नहीं लगी। वे ग्रामीण क्षेत्र बसोली के एक स्कूल में बच्चों को पढ़ाते हैं, जो कक्षा 1 से 8वीं तक का है।

हम लोग गरीब परिवार से हैं। हम बी.पी.एल. श्रेणी के अंतर्गत आते हैं। दूसरे लोगों की खेती-बाड़ी करके अपना जीवनयापन करते हैं। हमारे पास तीन भैंस, 4 बकरी, 1 बेल और 25 मुर्गियाँ हैं जिससे परिवार के गुजारे में थोड़ा सहारा मिल जाता है।

मेरे बच्चे रबिना, किरण, पवन पढ़ाई में बहुत अच्छे हैं हमेशा प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करते हैं। ***जब मेरी बेटी रबिना 8वीं कक्षा में पढ़ती थी तो अक्सर मुझसे कहती थी कि माँ, आप भी मेरे साथ पढ़ने के लिए स्कूल चलो न। तब मैं उसे समझाती कि बेटी, मैं तो तुम्हें पढ़ा-लिखाकर टीचर बनाना चाहती हूँ।*** उसकी बातों को मैं तब गम्भीरता से नहीं लेती थी। लेकिन जब वो 10वीं कक्षा में पहुँची तो उसने फिर से अपनी बात दोहराना शुरू कर दिया।

इस बार उसकी बात ने असर किया और मैंने उसके कहने पर 11वीं कक्षा के लिए प्राइवेट फॉर्म भर दिया। मेरी बेटी अपनी पढ़ाई के समय में से एक घंटा समय निकालकर मुझे पढ़ाती थी। जब परीक्षा का समय आया तो मैंने बहुत लगन से परीक्षा दी और पास हो गई। मेरी इस सफलता से मेरा परिवार काफी खुश हो गया।

उसके बाद बेटी की प्रेरणा से ही मैंने कक्षा 12 वीं का प्राइवेट फार्म भरा। मुझे घर के काम और खेतीबाड़ी-पशुपालन के बीच पढ़ने के लिए बहुत कम समय मिलता था इसलिए मैंने तय किया कि मैं जंगल में घास, लकड़ी लेने अपनी सहेलियों के साथ नहीं बल्कि अकेले ही जाऊँगी। उसके बाद मैंने जंगल में अकेले जाना शुरू कर दिया। जब भी मैं घास-लकड़ी लेने जाती एक कागज़ पर प्रश्न-उत्तर लिखकर ले जाया करती थी और याद करती थी। इस तरह मैंने 12वीं कक्षा भी पास कर ली। कक्षा 12वीं के बाद मैंने

पढ़ाई छोड़ दी। उसके बाद मैं खेती-बाड़ी और पशुपालन का कार्य करने लगी।

हम जब अपने बच्चों के साथ संघर्ष वाली बात करते थे तब मेरी बेटी किरण ने एक कविता सुनाई -

नन्हीं चिंटी जब दाना लेकर चलती है चढ़ती
दीवारों पर।
सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास रगों में साहस
भरता है।
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना ना अखरता है।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती और
कोशिश करने वाले की कभी हार नहीं होती

उसकी कविता से मुझे प्रेरणा मिलती। उन्हीं दिनों मुझे 'सेवा' की जानकारी मिली। 'सेवा' के बारे में जानकर मुझे बहुत अच्छा लगा और मैं भी उसकी सदस्य बन गई। 'सेवा' से मुझे बहुत मार्गदर्शन मिला। हम लोगों ने पंचायत में भी सदस्य बनाये। उसके बाद सभी बहनों से बातचीत करके अपना संगठन बनाया। संगठन बनाने के बाद सदस्यों के परिवारों को इकट्ठा करके उनके साथ मीटिंग करते और 'सेवा' के बारे में जानकारी देते। अब तो मोहल्ला मीटिंग भी करने लगे है। 'सेवा' से जुड़कर मेरा आत्मविश्वास बढ़ा।

सेवा की कर्मठ आगेवान बहनें

यह कहानी मुबारकपुर की आगेवान बहनों की जागरूकता की है जिन्होंने इस विकट स्थिति में भी बहुत सूझ-बूझ के साथ एक-दूसरे की मदद की। जैसा कि हम सभी को पता है कि इस विकट परिस्थिति में हर एक व्यक्ति के मन में एक डर है कि इस कोरोना काल का सामना कैसे किया जाए। इस महामारी के संक्रमण से खुद को और दूसरों को भी कैसे बचाया जाए।

मुबारकपुर-दानापुर एरिया में कोरोना का प्रकोप बहुत ही तेजी से फैल रहा है। इस समय, एरिया में जैसे कोरोना का विस्फोट हुआ हो इस तरह ये फैल रहा है। हर समय सभी को यह डर सता रहा है कि इससे किस तरह बचें। इस बात को ध्यान में रखते हुए बहनों ने जागरूकता हेतु डोर टू डोर बहनों को जाकर कोरोना के संक्रमण से बचने एवं इम्यूनिटी को मजबूत करने के लिए घरेलू नुस्खे के बारे में बताना शुरू किया।

वे बहनों को समझातीं कि इस बीमारी से लड़ने के लिए हमें अंदर से मजबूत रहना है और इसके लिए हमें समय-समय पर नींबू पानी या गर्म पानी पीना चाहिए। इसके साथ ही हमें हल्दी पाउडर वाला दूध भी दिन में दो से तीन बार लेना चाहिए। इसके अलावा, हमें तुलसी के पत्ते, अदरक आदि को डालकर बनाई गई चाय का भी सेवन करना चाहिए इससे हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है। संक्रमण से बचने में मदद मिलती है।

ये सभी आगेवान बहनें क्षेत्र के सभी मोहल्लों में जाकर समझाती हैं कि, बहुत जरूरी हो तो ही घर से बाहर जाएँ। बाहर आने-जाने एवं आपस में बात करते समय दूरी बनाए रखना चाहिए और मास्क का इस्तेमाल करना न भूलें। याद रखें कि जरा सी लापरवाही के कारण हम इसका शिकार बन सकते हैं, इसलिए सतर्क रहें। ***संक्रमण के काल में जब लोग एक-दूसरे से परहेज कर रहे हैं तब ये आगेवान बहनें अपने सेहत को जोखिम में डालकर मोहल्ले-मोहल्ले घूमकर बहनों को जागरूक कर रही हैं।***

- पूनम बेन,
'सेवा' पटना

मनरेगा के तहत बहनों को काम दिलवाया

उत्तराखंड के अल्मोड़ा व रूद्रप्रयाग के 8 ब्लॉक में मनरेगा का कार्य होता है। 8 ब्लॉक के प्रमुख को 'सेवा' के द्वारा पत्र भेजा गया है कि मनरेगा के तहत हमारे भाई-बहनों को काम दिया जाए क्योंकि इन सभी पर कोविड-19 के कारण काफी गहरा असर पड़ा है। ग्रामीण बहनों के आय के स्रोत बढ़ाने व वर्तमान में जो अन्य राज्यों से वापस आये हैं उन प्रवासी मजदूरों के लिए अपने राज्य में रोज़गार के अवसर बढ़ें इसके लिए मनरेगा के अंतर्गत कृषि व अन्य कार्यों को बढ़ाने, जैसे सिंचाई टेंक, चार दीवार, गोशाला, वर्मी कम्पोस्ट, गाँव तक रोड़ बनाने के कार्यों को जल्द शुरू करने की कृपा करें ताकि इन कामगारों को अन्य राज्यों में काम ढूँढने नहीं जाना पड़े।

पत्र भेजने के बाद इन 8 ब्लॉक में मनरेगा के कार्य शुरू किये गये। इसके अंतर्गत अभी सल्ट की 650 बहनें कार्य कर रही हैं।

इन बहनों को चार दीवारी, कम्पोस्ट खाद को संरक्षित करने के लिए बैग दिये गये हैं और साथ ही आलू-प्याज के बीज और फलों वाले पेड़ दिये गये हैं। इसके अलावा, दो टंकी का निर्माण, रास्तों का निर्माण किया गया है। वृक्षारोपण का कार्य भी किया गया है।

भूमिसुधारिकरण, चालखाल चार दीवारी का काम चल रहा है और रास्तों का निर्माण किया जा रहा है। बाकी काकड़ीघाट के गडस्यारी गोत टाकुला में अभी मनरेगा का कार्य नहीं हुआ है इसमें दिक्कत आ रही है।

- बीनाबेन,
डिस्ट्रीक्ट को-ऑर्डिनेटर

सुनीता की व्यथा

मेरा नाम सुनीता है। मैं इंदिरा कॉलोनी की रहने वाली हूँ और पिछले दस-बारह वर्षों से दूसरे के घरों में झाड़ू-पोंछा-बरतन आदि काम कर रही हूँ। मेरे घर की हालत बहुत खराब है! हम घर में 5 लोग हैं और कमाने वाला अब बस एक है और जब लॉकडाउन हुआ तो जिस घर में मैं काम करती थी उसके मालिकों ने मुझे काम से मना कर दिया और बोले कि अब काम पर मत आना क्योंकि कोरोना बीमारी है। मुझे लगा कि वे मुझे उसके बाद काम करने के लिए कहेंगे पर उन्होंने मेरा हिसाब कर दिया और आज तक उन्होंने मुझे काम पर वापस नहीं बुलाया और मैंने अपनी नौकरी खो दी। मेरी बेटी की शादी तालाबंदी के एक महीने पहले ही हुई थी। हमने अपनी कमाई से थोड़ा थोड़ा जोड़कर अपनी बेटी की शादी की थी लेकिन शादी के एक महीने बाद ही उसके पति की दुर्घटना में मृत्यु हो गई। यह उसके साथ-साथ हमारे लिए भी बहुत बड़ा सदमा था। फिर हम अपनी बेटी को वापस अपने घर ले आए। लॉकडाउन के कारण मेरा और मेरे घरवाले का काम रुक गया। हमारे घर में हम अब हम खाने वाले बहुत हैं लेकिन एकमात्र कमाने वाला मेरा पति ही है। मेरा घरवाला राजमिस्त्री के साथ दिहाड़ी का काम करता है। मेरे बेटे के पास कोई काम नहीं है और मेरी बेटियों के पास भी कोई काम नहीं है।

मैं जिस घर में काम करती थी वहाँ मुझे कपड़े और सफाई करने के लिए एक हजार रुपये महीने का भुगतान करते थे। लेकिन अब उन्होंने किसी और को कम पैसे में काम पर रख लिया है। मैं अब किसी और घर पर काम की तलाश कर रही हूँ। जब मेरा काम और मेरे परिवार का काम पूरी तरह से रुक गया था तब 'सेवा' पंजाब संस्था ने मुझे राशन दिया, जिससे हमें बहुत मदद मिली। हम उन सभी को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने इस कठिन समय में हमारी मदद की।

- जसप्रीत कौर,
एरिया इंचार्ज, मोगा

आपका अपना

'अनसूया' आपका अपना अख़बार

'अनसूया' अखबार का 34वाँ वर्ष चल रहा है। इसे अपने पाठकों-मित्रों-शुभचिन्तकों का स्नेह मिलता रहा है और आगे भी मिलेगा।

- ढेरों की तादाद में प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं के बीच स्त्रियों की पतवार बन अपने लिए एक निश्चित जगह बनाने वाली ''अनसूया'' का 34वाँ वर्ष चल रहा है।
- एक सूत से श्रमजीवी महिलाओं के साथ समूचे महिला विश्व को बाँधने को उदग्र 'अनसूया' का पाठक वर्ग सभी वर्गों को अपने में समाए हुए है।
- अहमदाबाद से बढ़कर 'सेवा' गुजरात, भारत तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विकसित हो रही है। तब उसके मुखपत्र 'अनसूया' के फलक की व्याप्ति भी बढ़ी है।
- राष्ट्र विकास के महिला संयोजन में लगातार संलग्न 'अनसूया' स्त्रियों के प्रति होने वाले अन्याय एवं शोषण के खिलाफ संगठित होने के लिए प्रयत्नशील है।

स्त्रियों को आत्मनिर्भर, आत्मवान बनाने की दिशा में 'अनसूया' की एक निश्चित भूमिका रही है। यह अखबार स्त्रियों के लिये प्रेरणास्रोत भी शुरू से रहा है। स्त्रियों को कठिन समय में निर्णय लेने की शक्ति इस अखबार से मिलती रही है।

यह आपका अपना अखबार है। इसे स्वयं भी नियमित पढ़ें और पड़ोसियों, मित्रों तथा नाते-रिश्तेदारों को भी भेंट स्वरूप दें।

'अनसूया' की आजीवन सदस्यता अभी भी सिर्फ 700/- रु. मात्र है और वार्षिक सदस्यता केवल 100/- रु. है।

'अनसूया' हर माह की 1 और 16 तारीख को प्रकाशित होती है।

'अनसूया' कार्यालय,
द्वारा-म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, मायाराम सुरजन स्मृति भवन,
पी.एण्ड टी. चौराहा,
शास्त्रीनगर, भोपाल(म.प्र.)- 462003

मालिक : ''अनसूया ट्रस्ट'' की ओर से प्रकाशक-मुद्रक : प्रीति शान्त, म.प्र.हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पी.एण्ड टी. चौराहा, शास्त्रीनगर, भोपाल (म.प्र.)-462003. फोन : 0755-2790039
मुद्रण : प्रियंका ऑफसेट, प्रेस कॉम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल. फोन : 2555789

अनसूया

अनसूया कार्यालय :

द्वारा- म.प्र.हिन्दी साहित्य सम्मेलन,
मायाराम सुरजन स्मृति भवन,पी.एण्ड टी.चौराहा,
शास्त्रीनगर, भोपाल (म.प्र.) 462003 फोन नं. : 2790039

ई-मेल - **ansuya_trust@rediffmail.com,**
website:www.sewabharat.org